

नीयत से बनती है नियति...

सभी का भाग्य पूर्व निर्धारित है या बनाया जाता है, इसको लेकर सभी दिग्भ्रमित हैं। भाग्य का आधार कर्म है या कर्म से ऊपर भी कुछ है! प्रश्न थोड़ा सा उलझा हुआ लग रहा है, लेकिन इसका उत्तर बहुत सीधा सा है कि जो कर्म हम कर रहे हैं उस कर्म की नीति क्या है और किस नीयत से किया जा रहा है।

किसी भी व्यक्ति एवं स्थान की एक नियति होती है और वह अबाध्य होती है, नियति के अनुरूप चीजें घटती हैं। अब प्रश्न उठता है कि नियति होती क्या है और बनती कैसे है?

नीति से नियति का निर्माण होता है

नीति का मतलब है कि व्यक्ति का उद्देश्य क्या है? वह क्या सोचता है और क्या करता है? किसे वो महत्व देता

है? इसको एक उदाहरण से हम समझ सकते हैं। इतिहास में महाभारत एक प्रचलित महाकाव्य है जिसके अंदर दिखाया गया कि महाराजा शान्तनु के वंशज कौरव और पांडव थे। अक्सर उस कहानी वाले आप पढ़ें तो आप पायेंगे कि कौरव सदा ही षड़यंत्रकारी, झूठे एवं अहंकारी थे। उनके जीवन का उद्देश्य अपने को स्थापित तो करना था, परंतु साथ ही साथ दूसरे को भी नीचे

गिराना था। उनकी नीति में पाप तथा पुण्य की कोई परिभाषा नहीं थी। वहीं

नियति कर्मों का परिणाम होती है। नीयत के अनुसार नियति होती है। जैसा हम सोचते हैं और जो हम कर्म करते हैं, वैसे ही हमारी नियति अर्थात् भाग्य का निर्माण होता है। सतत् सत्कर्म, सदाचरण एवं सद्भाव के द्वारा हम सर्वश्रेष्ठ नियति बना सकते हैं। इसके विपरीत यदि हमने कर्म किया तो नियति अत्यंत कष्टकारक हो सकती है।

दूसरी ओर पांडवों को सदा ही सदाचारी,

सत्य, न्यायप्रिय, त्यागी एवं परोपकारी दिखाया गया है। औरों की रक्षा के लिए वे अपने प्राणों की बाजी लगा देते थे। धर्म पर उनकी अगाध आस्था थी। उनकी नीति धर्म आधारित थी। जिस आधार से उनकी नियति बहुत अच्छी हुई या यूँ कह सकते हैं कि अच्छे भाग्य का निर्माण हुआ।

अब यहां प्रश्न उठता है कि क्या हम नियति का निर्माण कर सकते हैं? निश्चित रूप से कर सकते हैं।

नियति कर्मों का परिणाम होती है। नीयत के अनुसार नियति होती है। जैसा हम सोचते हैं और जो हम कर्म करते हैं, वैसे ही हमारी नियति अर्थात् भाग्य का निर्माण होता है। सतत् सत्कर्म, सदाचरण एवं सद्भाव के द्वारा हम सर्वश्रेष्ठ नियति बना सकते हैं। इसके विपरीत यदि हमने कर्म किया तो नियति अत्यंत कष्टकारक हो सकती

है। अभी तक जो कुछ भी हमारे साथ घटित हुआ है उसे नियति मानना दुर्भाग्यपूर्ण होगा, क्योंकि घटना का आधार हमारे अंदर की नीति और रीति है। जब नियम ठीक होंगे और वे विधिपूर्वक होंगे तो कुछ भी असंभव नहीं होगा।

बस करना क्या है, अपने आपको सुबह उठते ही अच्छे कर्म करने के लिए दृढ़-प्रतिज्ञ करना है। उसके लिए पूरे दिन की दिनचर्या निर्धारित करनी है तथा साथ ही साथ अटेन्शन से विधिपूर्वक श्रेष्ठ कर्म करना है। याद रहे, जो भी हम कर्म करें, वे अति श्रेष्ठ व परोपकार से भरा होना चाहिए। उससे हमें दुआयें भी मिलेंगी तथा हमारा भाग्य भी श्रेष्ठ हो जायेगा।



ब.कु. अनुज, दिल्ली

प्रश्न:- मैं एक 40 वर्षीय महिला हूँ। मेरा प्रश्न है कि यदि हम किसी को ब्याज पर पैसा देते हैं तो क्या उससे मिले हुए ब्याज को हम अपने और ईश्वरीय सेवा में लगा सकते हैं? इससे हमारा कोई कर्मों का हिसाब-किताब तो नहीं बनता? और मेरा दूसरा प्रश्न है कि यदि किसी ने पूर्व में हमें मदद की है और उसकी हमें याद आती है तो क्या ये गलत है?

उत्तर:- अब से 100 वर्ष पूर्व तो ब्याज पर धन का लेन-देन वर्जित था।

इसे पाप समझा जाता था। परंतु अब पिछले 100 वर्षों से यह मुख्य व्यवसाय बन गया है, इसलिए कलयुग की प्रथा अनुसार इसे गलत तो नहीं माना जा सकता। जिसे आप ब्याज पर धन दे रहे हैं, एक तरह से यह उसकी मदद करना भी है। परंतु यदि आप उससे अत्यधिक ब्याज लेते हैं तो यह पाप के खाते में जाता है। परंतु यदि ब्याज की दर उचित है तो आप उसे कहीं भी यूज कर सकते हैं। इससे कर्मों का हिसाब-किताब नहीं बनता। लेकिन हाँ, यदि उस व्यक्ति और आपके बीच में खींचतान होती है तो कर्मबंधन अवश्य बनता है।

जिसने हमें समय पर मदद की होती है, उसके हम एहसानमंद भी होते हैं। परंतु जब भी उसकी याद आए, उसका सच्चे मन से शुक्रिया करें और यह याद करें कि शिव बाबा ने ही उसके द्वारा मदद की और बाबा को धन्यवाद दें। फिर इसमें कोई हिसाब नहीं बनेगा।

प्रश्न:- मैं एक 30 वर्षीय बहन हूँ। मैंने ज्ञान भी लिया है, परंतु मेरी एक समस्या है कि मेरे मन में देवी-देवताओं के लिए और सभी अच्छे लोगों के लिए भी बुरे विचार आते हैं। यदि मैं किसी के लिए अच्छा भी सोचती हूँ तो तुरंत मेरी सोच नेगेटिव हो जाती है। मैं अपने इन नेगेटिव विचारों से बहुत परेशान हूँ, पता नहीं ये क्यों हो रहा है। कृपया निदान बतायें।

उत्तर:- कई बार ये नेगेटिव विचार व्यक्ति के अपने पूर्व

संस्कारों के कारण होते हैं, तो कई बार किसी भटकती आत्मा के कारण ये स्थिति बनती है। आजकल बहुत लोग जीवघात कर रहे हैं, इन आत्माओं को पुनर्जन्म जल्दी नहीं मिलता और ये अंतरिक्ष में भटकती रहती हैं। इनके नेगेटिव वायब्रेशन्स भी लोगों पर पड़ते हैं। कई लोगों को जीवघात करने की गहरी प्रेरणा भी देते हैं।

इनके प्रभाव से बचने के लिए आप सारे दिन में 108 बार अभ्यास करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तित्वान हूँ, अर्थात् हर घण्टे में 10 बार यह अभ्यास करें। इससे आप भटकती आत्माओं के



मन की बातें

ब.कु. सूर्य

प्रभाव से मुक्त हो जायेंगी। साथ ही आप पानी चार्ज करके भी पीयें।

आप प्रतिदिन 1 अव्यक्त मुरली का अध्ययन करें। उसकी मुख्य बातें नोट करें। अपनी प्योरिटी को बहुत बढ़ायें और स्वमान की अन्य बातों का भी अच्छा अभ्यास करें। आप जो बाबा का बैज पहनती हैं, उसे दायें हाथ में लेकर 21 बार संकल्प करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तित्वान हूँ और ये बैज रात-दिन पहनें। यदि आप बैज नहीं पहनती हैं तो पहनना शुरू करें। भले ही अंदर लगा लें। प्रतिदिन सवेरे उठकर योग का आनंद लें तो आप इससे शीघ्र ही मुक्त हो जायेंगी।

प्रश्न:- मैं 50 वर्षीय महिला हूँ। मेरे

2 बच्चे बिजनेस करते हैं, परंतु बहुत मेहनत करने के बाद भी उन्हें उचित सफलता नहीं मिल पा रही है। मुझे ऐसा लगता है कि ये मेरे पास्ट के बुरे कर्मों का परिणाम है। मैं अमृतवेले योग भी करती हूँ, मैंने बाबा को पत्र भी लिखा है, परंतु मुझे सफलता नहीं मिली। क्या करूँ?

उत्तर:- कुछ लोगों को सहज ही जीवन में सफलता मिलती है, वे तो अति भाग्यवान हैं। कुछ लोगों को कुछ मेहनत के बाद सफलता मिलती है, वे भी भाग्यवान हैं। परंतु जब मेहनत के बाद भी सफलता ना मिले तो समझना चाहिए कि पास्ट के कर्मों के कुछ विघ्न सामने आ रहे हैं।

इसके निवारण के लिए आप एक 21 दिन की विघ्न विनाशक योग भट्टी करें। ये भट्टी अमृतवेले के अतिरिक्त हो। एक भी दिन मिस ना हो। योग बहुत पॉवरफुल हो तो यह विघ्न अवश्य हट जायेगा। योग से पहले यह संकल्प करना कि मैं मास्टर सर्वशक्तित्वान हूँ, विघ्न विनाशक हूँ और इस योग की शक्ति से मेरे इन दोनों बच्चों के विघ्न नष्ट हो जाएं।

अपने दोनों बच्चों को भी सिखाना कि एक तो वे पुण्य कर्म करें और दूसरा किसी व्यसन के शिकार ना हों। अपनी मनोस्थिति को अच्छा रखें और जब भी सवेरे उठें तो 7 बार याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तित्वान हूँ और सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। बस ऐसा करने से उनके लिए सफलता का द्वार खुल जायेगा।

प्रश्न:- मैं सुनीता दसवीं क्लास में हूँ। मैं पढ़ने में बहुत कमजोर हूँ। कृपया उपाय बतायें।

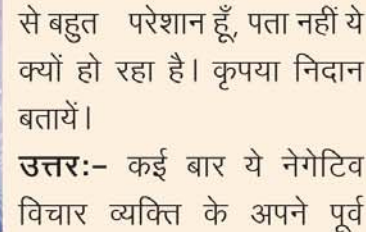
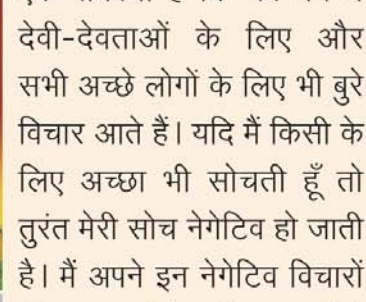
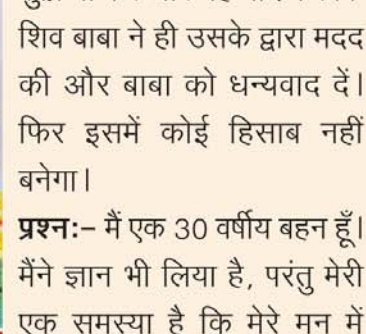
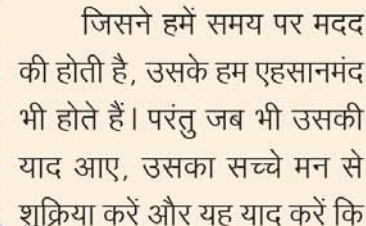
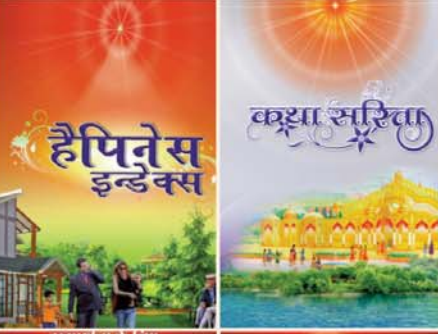
उत्तर:- आप जैसी ही एक दिल्ली की लड़की जो सेकेण्ड क्लास से ही ज़्यादा मार्क्स नहीं ला पाती थी, कुछ अच्छे अभ्यास करने से हाई स्कूल में उसके 88 प्रतिशत मार्क्स आए। आप भी पढ़ाई लिखाई में बहुत होशियार हो सकती हैं। पहले तो आधे घण्टे सवेरे-शाम अच्छा योगाभ्यास किया करें, इससे आपको मनइच्छित सफलता मिलेगी।

आप सवेरे उठते ही 5 बार याद करना - मैं बुद्धिमान हूँ... मैं चरित्रवान हूँ... मैं एकाग्रचित्त हूँ... मैं पढ़ाई में बहुत होशियार हूँ। पानी जब भी पीयो, उसे इस संकल्प से चार्ज करना कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। पानी को दृष्टि देकर यह संकल्प 7 बार करना और फिर यह संकल्प करना कि इस पानी को पीने से मेरी बुद्धि का विकास हो। साथ में किसी भी टाइम अपने ब्रेन को एनर्जी देना।

जब भी पढ़ाई या होमवर्क शुरू करो अथवा स्कूल के हर पीरियड के प्रारंभ में ये अभ्यास करना - मैं आत्मा स्वराज्याधिकारी हूँ... मन-बुद्धि की मालिक हूँ और फिर अपने मन-बुद्धि से बातें करना कि हे मेरे मन! तू शांत रहा कर। हे मेरी बुद्धि! अब जो भी मुझे पढ़ाया जाए या जो भी मैं पढ़ूँ, तू उन सबको ग्रहण कर लेना। इससे आपकी बौद्धिक शक्ति बढ़ने लगेगी। साथ ही साथ चलते-फिरते ये संकल्प कई बार करते रहना कि मैं मास्टर सर्वशक्तित्वान हूँ, सफलता मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है। ये सब आप 3 मास करना, आप होशियार विद्यार्थी बन जाएंगी।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

7 कदम राजयोग की ओर...



For Cable & DTH
+91 8104777111

TATA SKY 192

airtel digital TV 686

VIDEOCON 497

RELIANCE Digital TV 171

Peace of Mind

"C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E